देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय को प्रतिनिधि चाहिए
पत्रकारिता के साथ सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक-अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें- 91 8839797448/942443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट www.nirdaliya.com पर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५४/१६ अंक- ५४ | भोपाल, ३० अगस्त, डाक ३१ अगस्त २०२६ | भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित | पृष्ठ -८ | मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

नेपाल त्रासदी से छाया है अवसाद, सूनी हुई महफिलें कैसे दें अब दाद?

अग्र विचार
विचार प्रवाह-१७८

कैलाश आदमी

हाल ही नेपाल में हुई त्रासदी को हमें केवल जनहानि और सड़क, पुल एवं अन्य ढांचागत हानि की दृष्टि से ही नहीं देखना चाहिए बल्कि इस घटना को आगे आने वाले बड़े संकट की चेतावनी के रूप में देखना चाहिए।

आज भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश अपने विकास और अंनुसंधान की दृष्टि से अंतरिक्ष तक दौड़ में लगे हुए हैं लेकिन उस प्रक्रिया के अंतर्गत जो नुकसान पारिस्थितिक-तंत्र को उठाना पड़ रहा है उसे सामने रखकर भविष्य की विकास प्रक्रिया का निर्धारण करना चाहिए।

नेपाल वह देश है जो हिमालय जैसे संवेदनशील क्षेत्र की जड़ में स्थित है। यहां पारिस्थितिकी अत्यंत नाजुक है और यदि इससे आगे भी छेड़छाड़ जारी रही तो उसका खामियाजा ना केवल नेपाल बल्कि सिक्किम सहित पूरे भारत वर्ष और पड़ौसी देशों को भी उठाना पड़ सकता है। भारत के केदारनाथ में पहले भी वर्ष २०१३ में त्रासदी हो चुकी है इसलिए हमें विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि केदारनारथ की घटना के बाद भी हम हिमालय के प्रति गंभीर नहीं हुए और पारिस्थितिकी से छेड़छाड़ करते रहे। हमने परमाणु संयंत्र और इसरो के नित-नूतन प्रयोगों की तरफ ध्यान दिया लेकिन कार्बन उत्सर्जन को केवल कागजी तौर पर संभाले रखा जबकि कार्बन उत्सर्जन को संतुलित होने में हजारों वर्ष लगते हैं। पिछले २०० वर्षों में हुए कार्बन उत्सर्जन के कारण वैष्विक ऊष्मा अर्थात ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्याएं खड़ी हुई हैं किंतु हमने इस ओर ध्यान नहीं दिया बल्कि पारिस्थितिकी से छेड़छाड़ करते रहे। इसी का परिणाम है कि नेपाल में पहले भी त्रासदी हुई और तात्कालिक त्रासदी हमारे सामने है।

नेपाल में एक हिमखंड (ग्लेशियर) के टूटने को वर्तमान त्रासदी से जोड़ा जा रहा है। ऐसी त्रासदियों में पहले पानी के साथ भारी मलबा आता है जो नदियों और उनसे जुड़े क्षेत्रों को सर्वाधिक प्रभावित करता है। तिब्बत सीमा पर ग्लेशियरों के पिघलने से बाढ़ आई हो या हिम स्खलन से अथवा चट्टान खिसकने से भोटेकोसी नदी और उसकी सहायक नदियां उफान पर आई हों लेकिन यह तय है तिब्बत से सटे रसुआ और धाडिंग जिलों में प्रलय जैसी स्थिति निर्मित हुई तथा बिहार के वाल्मीक नगर में गंडक नदीं बांध के सभी छत्तीस दरवाजे खोलना पड़े। यद्यपि भारत सरकार और बिहार सरकार में गंडक बांध के समीपवर्ती जिलों चंपारण, गोपालगंज, सारन, मुजफ्फरपुर और वैशाली जिलों में सतर्कता बरतने के निर्देश दे दिए लेकिन आगे चलकर नेपाल में आई बाढ़ के गंभीर प्रभाव बिहार और उत्तप्रदेश के उन जिलों में दिखाई दे सकते हैं जो गंडक नदी से जुड़े कहलाते हैं। नेपाल में रसुआ-बेत्रावती (नुआकोट) सड़क जो ४२ किमी लंबी है बह गई। यह पहली बार हुआ कि नेपाल की राजधानी काठमांडू की गलियों में भी नदियों जैसी तेज धाराएं बह निकाली और नागरिकों को भारी भरकम मुसीबतों का सामना करना पड़ा।

नेपाल में वर्तमान त्रासदी से ३८९ लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा जबकि १५०० लोग लापता बताए गए जिनमें २९०भारतीय हैं। भारत से मानसरोवर यात्रा पर गए अधिकांश तीर्थ यात्रियों का पता लगा लिया गया है लेकिन अभी भी बहुत से तीर्थ यात्री लापता बताए जाते हैं। नेपाल में आए महाप्रलय ने विशेषकर तीन जिलों में भारी तबाही मचाई और ३५ पुल एवं ४५ केबल पुल तहस-नहस हो गए। बाढ़ की त्रासदी का असर विद्युत ढांचे पर भी पड़ा जिससे कई इलाकों में बिजली गुल हो गई और इंटरनेट सेवाएं ठप पड़ गईं। त्रिसूली व देवी घाट जल विद्युत परियोजनों को सर्वाधिक नुकसान पहुंचा। त्रिसूली बाजार और आसपास के सैकड़ों घर बह गए। सैलाब ने नेपाल के कई पर्यटन स्थलों की पहचान तक मिटा दी है।

इसरों के अनुसार ग्लेशियर का दो तिहाई हिस्सा ढह गया। त्रिसूली नदी सटे ग्लेशियर की सतह पर जमा पानी का रंग नीला पड़ने से त्रासदी के गंभीर परिणामों का अनुमान लगाया जा सकता है। कई जगह नदियों का बहाव रूक गया है तथा ०.११ वर्ग किमी की नई झील बन जाने से आगे भी बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। यह स्थान रसूआ गढ़ी सीमा से ऊपर ल्हेंदे नदी क्षेत्र में हैं। चीनी वैज्ञानिकों का अनुमान है कि नई झील में २० लाख क्यूबिक मीटर पानी जमा हो गया है तथा यह २४ घंटे १० लाख क्यूबिक मीटर और बढ़ सकता है। इससे प्राकृतिक बैरियर टूट सकते हैं। नेपाल के पूर्व मंत्री माधव प्रसाद चेलोगेन ने कहा कि यदि चीन बाढ़ आने की सूचना ४५ मिनट पहले दे देता तो नेपाल में अधिक सतर्कर्ता बरती जा सकती थी। चीनी दूतावास ने पूर्व मत्री की आशंका का खंडन किया है। इतना स्पष्ट है कि पूरे हिमालय में ७५०० ग्लेशियर झीले हैं उनमें से १८९ झीलें फटने की स्थिति में आ गई हैं। सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुर नदी बैसिन की चोटियों पर छोटी- बड़ी हजारों झीले हैं जबकि हिमालय के भारतीय क्षेत्र में कुल झीलों में से २४३१ ग्लेशियर झीलें ऐसी हैं जिनमें १८९ झीलों को अत्यधिक जोखिम भरी श्रेणी में रखा गया है जिससे भारत के सिक्किम और पड़ौसी देश भूटान भी चिंतित हैं। अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

नेपाल त्रासदी से छाया है अवसाद,
सूनी हुई महफिलें कैसे दें अब दाद?

विकास का एक कुरुप चेहरा: पिघलते टूटते ग्लेशियर और कृत्रिम झीलों के खतरे

मनोरमा पंत

दुनियाभर में ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा असर दुनिया भर के ग्लेशियरों पर पड़ा है ,जो तेजी से पिघल रहे हैं । २६ अगस्त को लांगटांग लिरूंग पहाड़ की ढ़लान का एक विशाल ग्लेशियर टूटा गया और लैंडेखोला नदी में गिर गया जिससे नदी का प्रवाह रूक गया जिससेभोटे काशी और त्रिशूली नदी में अचानक बाढ़ ने नेपाल में जो तबाही मचाई ,वह सब जानते हैं।

विगत कई वर्षो से दुनियाभर के ग्लेशियर पिघल रहे हैं टूट रहे हैं । ग्लेशियर से सम्बन्धी दो डरावनी खबरें पिछले वर्ष भी सामने आई थी जो दुनिया को चेतावनी दे रही थी कि अभी भी संभल जाओ। पहली खबर है नेपाल का याला ग्लेशियर जो पूरी तरह से पिघल गया है। नेपाल के लांगटांग घाटी में स्थित यह ग्लेशिलोजी प्रशिक्षण और कायोस्फीयर (जमे हुए ग्लेशियर, जमी हुई जमीन, जमी हुई मिट्टी आदि) अनुसंधान का अहम केन्द्र था। इसे अधिकारिक रूप से मई के महिने में मृत घोषित कर दिया गया है।

दूसरी खबर थी स्विट्जरलैण्ड के आल्पस पर्वत के बिर्च ग्लेशियर टूटने से ब्लैटन गाँव पूरी तरह से तबाह हो गया। ग्लेशियर टूटने के साथ ही पर्माफ्रॉस्ट (ग्लेशियर के पास की जमी हुई मिट्टी और चट्टाने जो शून्य डिग्री से कम तापमान पर पानी के साथ जम जाती है) के टूटने से लोनजा नदी का मार्ग बर्फ, कीचड़ और चट्टानों के सैलाब से अवरुद्ध हो गया और वहां एक कृत्रिम झील बन गई, जो फूटकर कभी भी भयंकर तबाही मचा देगी।

कनाडा का प्रसिध्द ग्लेशियर पेयतो भी अंतिम सांसे भर रहा है। भारत में कारगिल के पहाड बर्फ विहीन हो गये हैं और वहाँ की जीवन दायिनी सुरु नदी पूरी तरहसे सूखने से पानी के लिए हाहाकार मचा है।

ऊपरी हिमालय में बर्फ बारी तो होती है,परन्तु बढते तापमान के कारण ग्लेशियर जम नहीं पा रहे हैं और बर्फ पिघल रही है । ग्लेशियरों के लगातार पिघलने से हिमालय में कृत्रिम झीलों की संख्या बढ रही है, उनका विस्तार भी बढ़ रहा है क्यों कि तेजी से पिघलते ग्लेशियर इन्हें लगातार जल की आपूर्ति कर रहे हैं,अत: ये कभी भी फटकर पहाड़ों के ढलान पर बसे गांवों को बर्बाद कर सकती हैं ।कृत्रिम झीलों से तात्पर्य हाल में ही पिघलते ग्लेशियर के पानी से अस्तित्व में आ रही झीलों से हैं जो गांवों की तबाही का पर्याय बन रही हैं ।

ऐसी ही तबाही सिक्किम में हिम झील ल्होनक झील टूट ने से २०२३ में गई जिससे तीस्ता नदी का जल स्तर २० फीट तक बढ़ गया और जिससे चुँगथम बाँध टूटने से सिक्किम के चार जिले मंगन, पावक्योंग, नामची और गगटोक जिलों में जनधन की भारी तबाही हुई ।नदी के किनारे का आर्मी की स्थायी छावनी को बाढ ने लील लिया । बाइस जवान मारे गये पुल और सड़के टूट गई और लगभग २० से २२ हजार लोग बेघर हो गये। ऐसी ही घटना २०२१ में उत्तराखंड के चमोली जिले में हो चुकी है जिसकी यादें आज भी सिहरा जाती है। नेपाल में २३ तो सिक्किम में २५ झीले खतरनाक घोषित हो चुकी है।

पर्यावरण दिवस पर खबर आई कि कौसरनाग झील पूरी तरह पिघल चुकी है जो ११,५०० फीट की ऊँचाई पर मौजूद है। २०२१ में यह झील जमी रहती थी। ग्लेशियर वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में जम्मू कश्मीर, लद्दाख में मौजूद १८ हजार से भी अधिक ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। कश्मीर का सबसे बड़ा ग्लेशियर कोल्हाई के पिघलने की रफ्तार बहुत तेज है। इन्टरनेशनल सेन्टर फार इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट के अनुसार सदी के अंत तक हिमालय हिन्दुकुश के ग्लेशियर ८० प्रतिशत तक हिस्सा खो चुके होंगे।

दुनिया की दस बड़ी नदियों का क्या होगा जब ग्लेशियर पिघल जावेंगे? गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र येलो, मेकांग व एरावती, तारिम, साल्विन अमुदरिया नदियाँ ग्लेशियर से निकलती हैं, जिन पर अरबों लोगों का जीवन निर्भर है। इस वर्ष २२ मई को श्रीनगर का तापमान ३४.४ डिग्री था जो १३३ वर्ष में इस महिने में दर्ज हुआ। सर्वाधिक तापमान था। पिछले वर्ष भी यहां गर्मी के सभी रिकार्ड टूटे थे। जम्मू कश्मीर के मौसम वैज्ञानिकों ने अलर्ट किया है यहाँ तापमान अब घटेगा नहीं बढ़ेगा। सेटेलाइट डेटा बताता है कि पश्चिमी हिमालय में औसत तापमान ०.२ डिग्री बढ़ गया है। सालाना बारिश ०.३२ मिली घट गई। बर्फबारी के दिन कम होने से कोलाहाई, शेक्सर, शेषराम ग्लेशियर २१ प्रतिशत तक पीछे हटे गये हैं। ऐसी स्थिति में नदियाँ सूख जावेगी, न बर्फ रहेगी ना ही ठंडी हवायें बचेगी।

गंगा बेसिन में २४ प्रतिशत से कम हिम आवृत्ति रही जो २३ वर्षों में सबसे कम रही है। गंगा सिंधु और ब्रम्हपुत्र नदी के बेसिन में १३० ग्लेशियर, झीले हैं, जो धीरे-धीरे पिघल रही हैं। ग्लेशियरों के टूटने/पिघलने से लैंड स्लाइड होने से नदियों पर बने बाँधों में भारी मात्रा में कीचड़, चट्टानें मिट्टी का सैलाब भरने से उनकी जल भंडारन क्षमता कम होती जा रही है। यूनाइटेड नेशंस यूनिवर्सिटी इंस्ट्टीट्यूट आन वाटर, एनवायरमेंट एवं हेल्थ की रिपोर्ट कह रही है कि भारत में १० से २० प्रतिशत क्षमता खो चुके है। जो आगे जाकर जल संकट को जन्म देगी दूसरी ओर ग्लेशियर पिघल से नदियों के द्वारा भारी मात्रा में पानी समुद्रों में पहुँचने से उनका जलस्तर बढ़ने से समुद्रों के किनारों का कटाव बढ़ता जा रहा है और उसके किनारों पर स्थित कई शहर डूबने के कगार पर आ चुके हैं, जकार्ता, इंडोनेशियाई शहरों के साथ बम्बई भी इस खतरे की जद में है।

हिमालय के पहाड़ ढीले हो रहे हैं , ताप के आघात से व्यथित हैं । मनेरी जैसी अनेक जल विद्युत परियोजनाएँ चल रही हैं, पहाड़ों की छाती फाड़ कर सड़के बन चुकी है। बारह हजार करोड़ की ८८९ किलोमीटर चारधाम सड़क चौड़ीकरण परियोजना के चलते केवल गोमुख ग्लेशियर के पास ही दो लाख देवदार के पेड़ काट दिये गये। सोचे कि पूरे हिमालयीन क्षेत्र में कितने पेड़ कट चुके हैं और कट रहे हैं ।लाखों की संख्या में लोग हिमालयीन तीर्थों की यात्रा कर रहे हैं। आजकल आप हम सभी टेलीविजन पर देख रहे हैं इन तीर्थ स्थलों के रास्तों पर भारी जाम लगा हुआ है । लोगों की भीड़ भी ताप बढा रही है है ,प्रदूषण फैला रही है और अप्रत्यक्ष रुप से ग्लेशियर पिघलने में महत्वपूर्ण कारक बन रही है ।

केदारनाथ के ग्लेशियरों पर एक खतरा और मंडरा रहा है, वह है वहाँ हेलीकाप्टरों की उड़ान। १९९७-९८ में वहाँ केवल एक हेलीपैड था, जो बढ़कर आज बारह हो गये हैं। नौ कम्पनियाँ है। हर कम्पनी के हेलीकॉप्टर की उड़ान सीमा ६०० मीटर की ऊँचाई तक है परन्तु नियमों की सरासर अवेहलना कर उनको २५० मीटर की ऊँचाई पर उड़ाया जा रहा है जिनके सौ डेसीमल शोर के कारण वहाँ के ग्लेशियर काँपते रहते है। पता नहीं कब, इस लगातार कंपन से ग्लेशियर टूटकर भारी तबाही मचा देंगे। उनके द्वारा छोड़े गये धुएँ के कार्बन से ताप बढ़ता ही जा रहा है जो ग्लेशियर पिघलाने में अहम भूमिका निभाऐगा। सात जून रविवार की खबर पढकर कलेजा काँप गया कि वहां केदार घाटी में हर ढाई मिनिट में हेलीकॉप्टर एक उड़ान भर रहे हैं। छ जून को ३०४ उड़ानें भरी गई। रुद्र प्रयाग के पर्यावरणविद कह रहे हैं कि हेलीकॉप्टर की आवाज से पहाड दरक रहे हैं । वहाँ के अभ्यारण्य के वन्य जीव और दुर्लभ पक्षीजगत का जीवन प्रभावित हो रहा है । मन यह सोचकर ही घबरा रहा है कि १५,००० हजार फीट की ऊँचाई पर आदि कैलाश में एक नयातीर्थ आकार ले चुका है, जहाँ एक हेलीपैड भी तैयार है और हेलीकॉप्टर वहाँ भी उड़ान भरेंगे।

आइये, ग्लेशियरों के पिघलने के खतरों पर पुन: एक निगाह डाले। ग्लेशियर पिघलने से -कृत्रिम झीले निरन्तर बढ़ रही है, जो फटकर बाढ लाती हैं । ग्लेशियर पिघलने से भूस्खलन का खतरा हमेशा बना रहता है । हिम के बर्फ बनने की प्रक्रिया में बादल अधिक फटेगे जिससे एक ही दिन में एक ही स्थान पर भारी मात्रा में वर्षा होने से तबाही मचेगी। और यदि एक ही पंक्ति में बात कहे तो हिमालय का पूरा पारिस्थितिकीतंत्र ही गड़बड़ा जावेगा। मैदानों में मौसम प्रणालियाँ चरम होती जाएगी । ग्लेशियर सौर ऊर्जा को परावर्तित कर पृथ्वी के ताप संतुलन में अहं भूमिका अदा करते हैं । इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने २०२५ को ग्लेशियर संरक्षण वर्ष घोषित किया था। यह पहल यूनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य देशों के २०० से अधिक संगठनों से समर्थित है। इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ ग्लेशियर पुरस्कार विजेता अमेरिका के वाशिंगटन में स्थित दक्षिण कैस्केड ग्लेशियर बना है। आइये हम भी ग्लेशियर बचाने की पहल में योगदान दें। -भोपाल

वोट-चोर और चढ़ावा चोर के बाद कौन?

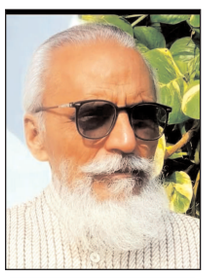

श्याम सिंह रावत

देसी नाजियों का गुरुकुल कभी भी खुला खेल फर्रूखाबादी नहीं खेलता। वह किसी भूमिगत संगठन की तरह अपने दाँव-पेंच खेलता है। अब एक सम्भावना देखी जा रही है कि वह इस ठस्स दिमाग आदमी को बाँकेलाल का उत्तराधिकारी बना सकता है।

हालाँकि यह विचार फिलहाल एक सम्भावना ही हो सकती है, शायद जिसकी पटकथा लिखी जा रही है क्योंकि उसके पास दूरगामी परिणाम देने वाला अपना खेल जारी रखने के लिए मोहरे ज्यादा नहीं हैं।

द फाइनेंशियल टाइम्स की ताज़ा रिपोर्ट ने लुटियंस के गलियारों में दबे एक सवाल को फिर सतह पर ला दिया है कि बाँकेलाल के बाद सत्ता की केंद्रीय कुर्सी पर कौन बैठेगा? इसके साथ ही असल सवाल यह भी है कि ऐसा उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार किसके पास है? स्वयं बाँकेलाल के पास, भाज पार्टी के पास या नागपुरिया गुरुकुल के पास?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए यह केवल चेहरा बदलने की सामान्य प्रक्रिया नहीं, बल्कि भाज पार्टी समेत संघ परिवार के भीतर सत्ता, प्रभाव, नियंत्रण और संगठन की वैश्विक स्तर पर मान्यता का असली संघर्ष है।

इसके अलावा एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि क्या हिंदू समाज देसी नाजियों के इस संगठन की अपने सरसंघचालक को ईरानी शिया नेता आयतुल्ला अली ख़ामेनेई की तरह हिंदुओं की धार्मिक आस्था और राजसत्ता का एकछत्र अधिष्ठाता देवता बनाने वाली दीर्घकालिक योजना को साकार करना स्वीकार कर लेगा? क्या हिंदुओं की शंकराचार्य परंपरा का समय समाप्त हो गया है? क्या धार्मिक क्षेत्र में अखाड़ों की कोई भूमिका नहीं रही?

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण और उसके उपरांत उसके संचालन के लिए गठित ट्रस्ट द्वारा ही नहीं बल्कि बदरीनाथ, केदारनाथ से लेकर वैष्णोदेवी, उज्जैन, नाथद्वारा आदि स्थित मंदिरों के चढ़ावे की व्यापक स्तर पर चोरी की गई है, उससे हिंदुओं की धार्मिक आस्था को बड़ी गहरी चोट लगी है जिसके कलंक से रासस को मुक्त होने में लंबा समय लगेगा।

उसे पहले की तरह अब कॉरपोरेट क्षेत्र के धनपशुओं का सहयोग मिलना कठिन हो गया है क्योंकि जनता की क्रयशक्ति लगातार क्षीण होते जाने से उसकी तिजौरियों का फूलना भी बंद-सा हो गया है। इसलिए वह आकाशबेल की तरह देश को चूसते रहने से अब खुद उसके साथ ही सूख जाने का खतरा मोल लेना नहीं चाहेगा।

तो क्या बाँकेलाल या संघ देश के मत्थे अपनी पसंद मढ़ सकेंगे? क्या रासस तय करेगा कि देश का अगला प्रधानसेवक कौन होगा? क्या वह देश के बँटवारे के लिए काँग्रेस के साथ-साथ समाजवादी पार्टी को जिम्मेदार ठहराने वाले इतिहासकार संन्यासियों जैसे कपड़े पहनने वाले अजय सिंह बिष्ट उर्फ आदित्यनाथ के हाथों में देश की बागडोर थमाने को तैयार है? शायद संघ को ऐसे ही उग्रवादी जड़बुद्धि पसंद हैं।

– रानीखेत, हल्द्वानी

कैसे दोस्ती करें उन सपेरों से

माधुरी राऊलकर

कितनी शिकायत करें अंधेरों से,
नई उम्मीद जगा सकते सवेरों से।

ऐसा करें, उजालों की तलाश में,
हम निकलें अपने-अपने घेरों से।

ये जैसा भी है, आखिर है अपना,
शिकवा न कीजिए अपने बसेरों से।

लाख सही रास्तों पर चलें लेकिन,
कौन बच पाया वक्त के फेरों से।

जो सिखाता रहा एक धुन में नचाना,
कैसे दोस्ती करें उन सपेरों से।

अच्छा काम करना तो आज कर लीजिए,
पूछना नहीं वक्त के लुटेरों से।

-नागपुर (महाराष्ट्र)

रचनाएं आमंत्रित हैं

नई दिल्ली से प्रकाशित
अंतर्राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
'निर्दलीय'

सितंबर माह के आरंभ में प्रकाशित होने जा रहे विशेषांक का विषय है –

किशोरों की दशा और दिशा

(संदर्भ जेन जी/जेन अल्फा आंदोलन)

इस विशेषांक में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को केंद्रित करत हुए नई सोच, कुंठा, घुटन, संत्रास और संवेदना को अपनी मौलिक और अप्रकाशित समसामयिकता से जुड़े आलेख/ समालोचना, संस्मरण, कहानी, लघुकथाएँ, गीत, ग़ज़ल, कविताएँ, ३१ अगस्त तक सादर आमंत्रित हैं। स्वीकृत रचनाओं की सूचना दी जाएगी– कैलाश आदमी, संस्थापक संपादक

ईमेल–nirdaliyadaily@gmail.com
वाट्सएप–
९४२४४४३४०१, ८८३९७९७४४८

बहनों ने भाइयों की कलाई पर बांधे रक्षासूत्र, भाइयों ने दिया रक्षा का वचन

निर्दलीय संवाद

भिण्ड। भाई-बहन के प्रेम और स्नेह का त्योहार रक्षा बंधन श्रावण की पूर्णिमा के दिन जिले भर में हर्ष और सौहार्द के साथ मनाया गया। बहनों ने अपने भाइयों को तिलक कर उनकी कलाई पर राखी बांधी और भाईयों ने उन्हें उपहार देते हुए रक्षा का वचन दिया।

सुबह से ही घर-घर में भाई-बहन के अटूट प्रेम का नजारा देखने को मिला। बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर उनके सुख-समृद्धि और दीर्घायु की कामना की, जबकि भाइयों ने बहनों को उपहार भेंट कर जीवनभर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। पूरे जिले में स्नेह और अपनत्व का एक खूबसूरत माहौल बना रहा।

रक्षाबंधन के एक दिवस पूर्व गुरुवार को बाजारों में चहल-पहल बढ़ गई थी। राखी, कपड़े, साड़ियां, मिठाई और उपहारों की दुकानों पर

दिन भर भीड़ बनी रही। इस बार राखियों के दामों में लगभग 15 से 20 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। बाजार में पारंपरिक राखियों के साथ-साथ कार्टून कैरेक्टर वाली राखियां, हैंडमेड और विशेष डिज़ाइन वाली राखियों की खूब बिक्री हुई। छोटे बच्चों और युवतियों में आकर्षक राखियों को लेकर खास उत्साह देखा गया। पूर्णिमा के दिन घरों में सुबह से ही पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाया गया। बहनों ने भाइयों को तिलक कर आरती उतारी और मिठाई खिलाकर राखी बांधी। कुछ परिवारों में रिश्तेदार और सगे-संबंधी दूर-दराज से इस अवसर पर एकत्र हुए, जिससे त्योहार की खुशियां और भी बढ़ गईं। भाई बहन के प्रेम के प्रतीक का पर्व रक्षाबंधन जिले भर में हर्षोल्लास से मनाया गया। हिंदू धर्म में रक्षाबंधन के त्योहार का विशेष महत्व होता है।

दंदरौआ धाम में श्रावणी उपाकर्म उत्सव मनाया

निर्दलीय संवाद

भिण्ड। जिले के सबसे बड़े धार्मिक स्थल दंदरौआ धाम में श्रावणी पूर्णिमा के पावन पर्व पर मंदिर परिसर में संचालित श्री पुरुषोत्तम संस्कृत विद्यालय के शिक्षकों और छात्रों ने शुक्रवार को श्रीश्री 1008 महंत महामंडलेश्वर रामदास महाराज के सानिध्य में श्रावणी उपाकर्म उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर शिक्षकों और छात्रों ने में पुराने जनेऊ उतारकर नए जनेऊ धारण किए। श्रावणी उपाकर्म उत्सव के पावन अवसर पर विद्यालय प्राचार्य भोलाराम शर्मा ने कहा कि श्रावणी उपाकर्म का उद्देश्य वेदाध्ययन, संस्कार और आध्यात्मिक अनुशासन नवीनीकरण करना है। इसका संबंध मुख्य रूप से वैदिक परंपरा, ऋषियों के आशीर्वाद और आत्मशुद्धि से है। श्रावणी उपाकर्म का उल्लेख वेदों, ग्रंथों और पुराणों में मिलता है। उपाकर्म का अर्थ है फिर से आरंभकरना। वेद एवं संस्कृत भारतीय ज्ञान-परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। नई पीढ़ी को वैदिक संस्कारों, गुरु-शिष्य परंपरा तथा स्वाध्याय से जोड़ना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि यज्ञोपवीत, यानी जनेऊ, द्विज पुरुषों के लिए ज्ञान, कर्तव्य और अनुशासन का प्रतीक है।।

महंत महामंडलेश्वर रामदास महाराज ने बताया कि श्रावणी उपाकर्म का आध्यात्मिक संदेश यह है कि मनुष्य समय-समय पर अपने जीवन को पवित्र विचारों, सदुणों और धर्ममार्ग की ओर मोड़े। जैसे जनेऊ बदलकर नई डोरी धारण की जाती है, वैसे ही हमें अपने विचारों और कर्मों को भी शुद्ध करना चाहिए।

झिलमिल बेसली नदियों का जलस्तर बढ़ा, चार पुल डूबे

निर्दलीय संवाद

भिण्ड। जिले के मेहगांव क्षेत्र में पिछले तीन दिनों से हो रही बारिश के बाद झिलमिल और बेसली नदियों का जलस्तर बढ़ गया है। जलस्तर बढ़ते ही ग्रामीण सड़कों पर बने चार पुल-पुलिया पानी में डूब गए हैं।

गहेली कनाथर के पास झिलमिल नदी का जलस्तर बढ़ने से पुल-पुलिया पानी में डूब गई है। इस मार्ग से सीधे मेहगांव जाने वाले ग्रामीणों का आवागमन प्रभावित हो गया है। अब लोगों को अमायन और मौ होकर गोरम-चिटावली के रास्ते मेहगांव पहुंचना पड़ रहा है। इससे ग्रामीणों का सफर पहले की तुलना में काफी लंबा हो गया है। कुपावली के पास झिलमिल नदी पर बना पुल भी बढ़े जलस्तर की चपेट में आ गया है। सामान्य दिनों में ग्रामीण आजीमाता होते हुए सीधे मेहगांव पहुंच जाते हैं, लेकिन पुल डूबने के बाद यह रास्ता बंद हो गया है। अब गोरम-चिटावली होकर जाना पड़ रहा है। इससे मेहगांव पहुंचने की दूरी करीब 30 किलोमीटर से बढ़कर लगभग 50 किलोमीटर हो गई है।

वृद्धजनों को राखी बांध कर लिया आशीर्वाद

निर्दलीय संवाद

भिण्ड। रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर हम फाउण्डेशन सिटी शाखा ने आनंद धाम पहुंचकर वृद्धजनों के साथ रक्षाबंधन का पर्व आत्मीयता और उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर वृद्धजनों को राखी बांधकर उनके साथ खुशियां साझा कीं तथा उनका आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर हम फाउण्डेशन के प्रदेश अध्यक्ष प्रो. इकबाल अली ने कहा कि रक्षाबंधन पर्व, प्रेम, स्नेह और आपसी विश्वास का पर्व है। आनंदधाम में वृद्धजनों के साथ रक्षाबंधन मानना हम सभी के लिए भावनात्मक और प्रेरणात्मक अनुभव है। समाज में यदि हम बुजुर्गों के प्रति सम्मान संवेदना और अपनत्व की भावना रखें तो इससे नई पीढ़ी कोई मानवीय मूल्य की प्रेरणा मिलेगी। प्रांतीय उपाध्यक्ष शैलेष सक्सेना ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का पर्व नहीं, बल्कि समाज में आपसी स्नेह, सम्मान, सेवा और भाईचारे की भावना को मजबूत करने का संदेश भी देता है। वृद्धजन हमारे समाज की अमूल्य धरोहर हैं और उनके अनुभवों एवं आशीर्वाद का सम्मान करना हम सभी का दायित्व है।

अर्थलक्ष कैपिटल्स दे रहा व्यक्तिगत वित्तीय योजना और निवेश मार्गदर्शन का भरोसा

निर्दलीय संवाद

सौसर। आज के समय में बेहतर भविष्य के लिए सही वित्तीय योजना और धन का उचित प्रबंधन बेहद महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से अर्थलक्ष कैपिटल्स द्वारा ग्राहकों को उनके आर्थिक लक्ष्यों के अनुरूप व्यक्तिगत वित्तीय योजना एवं मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा रहा है।

अर्थलक्ष कैपिटल्स का उद्देश्य लोगों को उनके भविष्य के लक्ष्यों के लिए धन का बेहतर नियोजन करने में सहायता करना है। संस्था की ओर से लक्ष्य आधारित वित्तीय योजना, व्यक्तिगत सलाह, विश्वसनीय मार्गदर्शन और संपत्ति वृद्धि जैसे क्षेत्रों में सेवाएं उपलब्ध कराने की जानकारी दी गई है। वित्तीय सलाहकार ज्योत्सना पाथरीकर ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक आवश्यकताएं और भविष्य के लक्ष्य अलग-अलग होते हैं। ऐसे में वित्तीय योजना भी व्यक्ति की जरूरत और लक्ष्य के अनुरूप होना आवश्यक है। सही योजना के माध्यम से बचत एवं निवेश को व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाने में सहायता मिल सकती है। अर्थलक्ष कैपिटल्स की ओर से लोगों को अपने वित्तीय भविष्य के प्रति जागरूक होकर योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ने का संदेश दिया गया है।

जैन समाज ने थाने से मंदिर पहुंचाई मूर्तियां

निर्दलीय संवाद

सौसर। नगर के जैन मंदिर से 19 अगस्त को चोरी हुई तीर्थंकर भगवान की मूर्तियां एवं अन्य सामग्री बरामद होने के बाद न्यायालय के आदेश पर सौसर पुलिस ने उन्हें सकल जैन समाज के प्रतिनिधियों को सौंप दिया। मूर्तियां वापस मिलने की सूचना से जैन समाज में खुशी का माहौल रहा। समाजजनों ने गाजे-बाजे के साथ सौसर थाने पहुंचकर पुलिस प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया और मूर्तियों को विधि-विधान के साथ जैन मंदिर तक ले जाया गया।

थाने से मूर्तियों को लेकर निकली शोभायात्रा में बड़ी संख्या में जैन समाज के श्रावक-श्राविकाएं शामिल हुए। नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए शोभायात्रा जैन मंदिर पहुंची। इस दौरान श्रद्धालुओं

ने धार्मिक जयकारे लगाए और वातावरण भक्तिमय हो गया। मंदिर पहुंचने के बाद समाजजनों द्वारा तीर्थंकर भगवान की मूर्तियों का विधि-विधान एवं धार्मिक परंपराओं के अनुसार अभिषेक किया गया। मूर्तियों के पुनः मंदिर में विराजमान होने पर समाजजनों ने प्रसन्नता व्यक्त की।

इस अवसर पर सकल जैन समाज ने चोरी की घटना का खुलासा कर मूर्तियां एवं चोरी हुई राशि बरामद करने तथा न्यायालय के आदेशानुसार समाज को सुपुर्द करने पर सौसर पुलिस प्रशासन का आभार जताया। समाज की ओर से पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सत्कार भी किया गया। समाजजनों ने कहा कि पुलिस की तत्परता और कार्रवाई से धार्मिक आस्था से जुड़ी अमूल्य धरोहर वापस मिल सकी है।

संस्कार पब्लिक स्कूल में गायत्री परिवार ने मनाया रक्षाबंधन

निर्दलीय संवाद

सौसर। स्थानीय प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान संस्कार पब्लिक स्कूल में रक्षाबंधन का पर्व बड़े ही हर्षोल्लास, उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन गायत्री शक्तिपीठ, सौसर की बहनों के सान्निध्य में किया गया, जिसमें स्कूली बच्चों ने भारतीय संस्कृति के इस पवित्र पर्व के मर्म को समझा। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए संस्था के संचालक चित्रसेन रबडे एवं सोनाली रबडे ने बताया कि गायत्री परिवार की बहनों ने विद्यार्थियों को केवल राखी बांधने की परंपरा ही नहीं, बल्कि रक्षाबंधन के पीछे छिपे आध्यात्मिक, सामाजिक और पारिवारिक महत्व के बारे में विस्तार से बताया।

बहनों ने कहा कि राखी केवल एक धागा नहीं, बल्कि प्रेम, सम्मान, विश्वास और जिम्मेदारी का अटूट बंधन है। भाई का कर्तव्य केवल अपनी बहन की रक्षा करना ही नहीं, बल्कि समाज की हर बहन-बेटी के सम्मान की रक्षा करना है। कार्यक्रम का सबसे भावुक क्षण तब आया जब शांतिकुंज, हरिद्वार से प्राप्त विशेष पत्र भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना का वाचन किया गया। पत्र में लिखे भाई के पांच संकल्पों - नशामुक्त जीवन, नारी सम्मान, राष्ट्र निर्माण, संस्कारवान परिवार और समाज सेवा को सभी विद्यार्थियों ने हाथ उठाकर दोहराया और जीवन भर उसका पालन करने का वचन लिया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में भाई-बहन के प्रेम का अनोखा दृश्य देखने को मिला। आयोजन ने बच्चों में भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, सद्भाव और पारिवारिक एकता की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया।

देव जागेश्वरनाथ मंदिर में श्रावणी उपाकर्म, विप्रजनों ने लिया संस्कार संरक्षण का संकल्प

निर्दलीय संवाद

दमोह। देव जागेश्वरनाथ जी मंदिर, बांदकपुर परिसर की पावन बावड़ी में श्रावणी उपाकर्म वैदिक परंपरा के साथ संपन्न हुआ। जिलेभर से पहुंचे ब्राह्मणों और अनुयायियों ने विधि-विधान से अनुष्ठान में भाग लिया।

कार्यक्रम मंदिर ट्रस्ट के प्रबंधक आचार्य पंडित रामकृपाल पाठक शास्त्री के मार्गदर्शन में हुआ। संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य पंडित कुंजीलाल डिम्हा ने वैदिक मंत्रों का शुद्ध उच्चारण कर कर्म संपन्न कराया। मंत्रोच्चार से बावड़ी और मंदिर परिसर आध्यात्मिक वातावरण से भर गया।

श्रावणी उपाकर्म वेदाध्ययन, आत्मशुद्धि और ऋषि परंपरा के स्मरण का पर्व है। इसमें व्यक्ति ज्ञान, संयम और धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लेता है। बावड़ी के पवित्र जल के समीप अनुष्ठान कर शुद्धि और नवीन संकल्प का संदेश दिया गया।

मंदिर ट्रस्ट के प्रवक्ता आचार्य पंडित रवि शास्त्री ने कहा कि वर्तमान में वैदिक संस्कारों का संरक्षण जरूरी है। ऐसे पर्व समाज को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं और ज्ञान, अनुशासन व सदाचार का महत्व बताते हैं। उन्होंने

नई पीढ़ी तक इन परंपराओं को पहुंचाने की बात कही।

ट्रस्ट प्रबंधक आचार्य पंडित रामकृपाल पाठक शास्त्री ने बताया कि मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि संस्कृत, वेद और सनातन परंपराओं के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ट्रस्ट समय-समय पर ऐसे आयोजन कर युवाओं को वैदिक विरासत से जोड़ने का प्रयास करता है।

उपस्थित विप्रजनों ने वैदिक संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण का संकल्प लिया। पूरा कार्यक्रम श्रद्धा और सनातन परंपरा के अनुरूप रहा।

लोकेशन ट्रेस कर सीहोर पहुंची पुलिस- सारणी से गायब नाबालिग मिली, आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई

निर्दलीय संवाद

बैतूल / सारणी। थाना क्षेत्र की एक नाबालिग बालिका को बरेठा निवासी 20 वर्षीय युवक बहला-फुसला कर अपने साथ सीहोर के गुडलिया ले गया था। वहां उसने उसके साथ दुष्कर्म किया। शिकायत पर पुलिस ने अपहृत बालिका को बरामद कर लिया है। वहीं आरोपी भी गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस ने बताया कि 8 मई 2026 को फरियादिया द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि उसकी नाबालिग पुत्री को कोई अज्ञात व्यक्ति बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है। रिपोर्ट पर धारा 137(2) बीएनएस के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुलिस द्वारा प्रकरण की गहन विवेचना एवं तकनीकी माध्यमों से अपहृता की तलाश की गई। प्राप्त लोकेशन के आधार पर पुलिस टीम को गुडलिया, जिला सीहोर रवाना किया गया। पुलिस द्वारा कार्रवाई करते हुए नाबालिग अपहृता को आरोपी राजकुमार पिता संतोष वरकड़े, उम्र 20 वर्ष, निवासी बरेठा के कब्जे से दस्तयाब किया गया। अपहृता के कथनों एवं विवेचना में प्राप्त तथ्यों के आधार पर आरोपी द्वारा बहला-फुसलाकर नाबालिग को अपने साथ ले जाना तथा उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए जाने के तथ्य सामने आए। जिस पर प्रकरण में धारा 64(2)(एम) बीएनएस एवं धारा 5(एल)/6 पॉक्सो एक्ट का इजाफा किया गया। आरोपी राजकुमार वरकड़े को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इस मामले में थाना प्रभारी सारणी जयपाल इनवाती, उप निरीक्षक सुनील गौर, आरक्षक मोहित भाटी, मनोज पाल की विशेष भूमिका रही। पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन द्वारा पुलिस टीम की त्वरित एवं सराहनीय कार्रवाई की प्रशंसा की गई है।

पैसे खर्च हुए, सड़क नहीं बनी... लोग परेशान

निर्दलीय संवाद

बैतूल। विधायक हेमंत खंडेलवाल के विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों को लेकर सवाल खड़े हो गए हैं। ग्राम मालाझरी पंचायत अंतर्गत सोनहिल कॉलोनी की सड़क लंबे समय से बदहाल है। जगह-जगह गड्ढे और टूटे मार्ग के कारण रहवासियों को रोजाना आवागमन में दिक्कत हो रही है।

रहवासियों का कहना है कि सड़क सुधार की मांग काफी समय से की जा रही है, लेकिन ठोस कार्रवाई नहीं हुई। करीब तीन महीने पहले इस समस्या को लेकर प्रदेश अध्यक्ष को आवेदन दिया गया था। प्रदेश अध्यक्ष ने अपने लेटरहेड पर पत्र जारी कर जिला पंचायत को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए थे।

इसके बावजूद सड़क की हालत जस की तस बनी हुई है। सूत्रों के अनुसार विधायक निधि से सड़क निर्माण के लिए पंचायत को दो लाख रुपये दिए गए थे, लेकिन काम सिर्फ कागजों तक सीमित रहने के आरोप लग रहे हैं। ऐसे में विधायक निधि के उपयोग की जांच की मांग उठने लगी है।

जब प्रदेश अध्यक्ष स्तर से संज्ञान लिया गया और जिला पंचायत को पत्र भेजा गया, तब भी कार्रवाई की रफ्तार धीमी क्यों रही? क्या मामला सिर्फ पत्राचार तक रह गया? अधिकारियों ने मौके पर जाकर स्थिति का आकलन किया या नहीं? ये सवाल अब सामने आ रहे हैं।

एक तरफ विकास के दावे किए जा रहे हैं, दूसरी तरफ सोनहिल कॉलोनी के रहवासी बदहाल सड़क से जूझ रहे हैं। विधायक हेमंत खंडेलवाल की मंशा सही बताई जा रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं।

संबंधित पंचायत और जिला स्तर के अधिकारियों को मौके का निरीक्षण कर सड़क की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। तीन महीने पहले भेजे गए पत्र के बाद अब तक क्या कार्रवाई हुई, किसे जिम्मेदारी दी गई और सड़क सुधार का काम कब शुरू होगा, इसकी जानकारी सार्वजनिक की जानी चाहिए।